कुव्यवस्था की मार झेल रहा शास्त्री अस्पताल

डॉक्टरों और सहयोगी स्टाफ की है कमी

अंकित गुप्ता, नई दिल्ली

दिल्ली सरकार अपने अस्पतालों की चाक चौबंद व्यवस्था को लेकर भले ही अपनी पीठ थपथपाए लेकिन जमीनी हकीकत इससे कोसों दूर है। अगर आप दिल्ली सरकार के अस्पतालों में इलाज के लिए जाएंगें तो आपको वहां निराशा हाथ लगेगी। कुछ अस्पताल तो ऐसे हैं मानों वहां मछली और सब्जी बिक रही हो। खिचड़ीपुर स्थित लाल बहादुर शास्त्री सदर अस्पताल की हालत कुछ ऐसी ही है। जहां मरीजों की लंबी कतारें तो लगती है, लेकिन उस अनुपात में डॉक्टर नहीं हैं। दवा के लिए भी मरीजों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। इसका खामियाजा खासकर के गर्भवती महिलाओं को भुगतना पड़ रहा है।

मयूर विहार की रहने वाली शलीमा खातून गर्भवती हैं। वह फरवरी माह से ही डिलिवरी नंबर आने का इंतजार कर रही है। उनके पति मो. असलम ने बताया कि घर की माली हालत ऐसी नहीं है कि वो किसी प्राइवेट अस्पताल में पत्नी का इलाज करा सके। कई बार डॉक्टर ऐसी दवा लिख देते हैं जो यहां डिस्पेंसरी में नहीं मिलती है। इस वजह से उन्हें बाहर से महंगी दवाइयां खरीदनी पड़ती है। आसपास कोई दूसरा सरकारी अस्पताल नहीं है इस वजह से मजबूरी में उन्हें यहां इलाज के लिए आना पड़ता है।

दवा लेने के लिए कतार में लगे लोग

- दवा के लिए मरीजों को करनी पड़ती है मशक्कत
- सुरक्षा का नहीं है व्यापक प्रबंध

खिचड़ीपुर के ही निवासी सतेन्द्र अचानक सर में चक्कर आने के बाद बेहोश हो गए। आनन-फानन में उनके परिजन उन्हें लेकर ईलाज के लिए इस अस्पताल में पहुंचें। इमरजेंसी में उपलब्ध डॉक्टर ने देखकर दवाई लाने को कहा। लेकिन दवाखना के आगे भीड़ देखकर परिजन ने बाहर से ही दवाई खरीदना उचित समझा वहीं कुछ मरीज कड़ी मशक्कत के बाद दवा लेकर उसका उपयोग करने की जानकारी लेने के लिए अस्पताल में भटकते दिखे। यहां की महिला चिकित्सक मीना सिंह का कहना है कि यहां मरीजों के मुकाबले डॉक्टर और अन्य स्टाफ की काफी कमी है। इस समस्या को लेकर हमने प्रशासन को कई बार सूचना दी लेकिन अधिकारियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

अस्पताल में मोबाइल और पर्स चोरी

सदर अस्पताल में दवाओं के लिए लाईन में लगे लोगों के मोबाईल और पर्स चोरी हो रहे हैं दवाखाना के आगे लगी कतार की भारी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए सिर्फ एक सुरक्षा गार्ड रहता है। जिसका फायदा यहां चोर एवं जेबतराश उठा रहे हैं। इस वजह से लाइन में लगे लोग सशंकित रहते हैं।

सोमवार को मयूर विहार से आए लक्ष्मीकांत मेहता दोपहर ढ़ाई बजे के करीब लाईन में लगे हुए थे तभी उनका मोबाइल किसी ने उड़ा लिया। वहीं खिचड़ीपुर के ही निवासी अनिल का पर्स गायब हो गया। पर्स में आठ सौ रूपया, आधार कार्ड और कुछ जरूरी कागजात थे। उन्होंने इस बाबत जब अस्पताल प्रशासन से शिकायत की तो प्रशासन ने यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया कि वे इस मसले पर कुछ नहीं कर सकते। लोगों को खुद सतर्क रहना चाहिए।

WHAT HAPPENED TO HOHO ?

Divya Bishi, New Delhi

Due to ultra-modern transport system in-Delhi, Delhi tourism projects HOHO has lostits charm.

India's first'Hop On Hop Off'(HOHO) sightseeing Buses was introduced during 2010 commonwealth Games by Delhi Transportation and Transportation Development Corporation.

Tourists can catch this bus and dropanywhere as per to their desire at any of the stops along the way. The buses are available on the route between 8 AM – 8 PM at the interval of approximately half an hour. These tours are conducted in specially designed buses which move continuously along a route.The service is designed to provide a complete experience of the city to a tourist. Despite having several facilities like air-conditioned services, 30 minutes frequency, tour and audio guides and pre-available tickets these luxury buses are facing a stiff competition from private cabs services like OLA, UBER, MERU and etc. This is probably because of the fact that the tourists find them more convenient and more user- friendly public mode . Tourist visiting from other states to the capital, find travel via metro an interesting experience.When asked about HOHO, Deepak and his family members from Bulandshahar, who visited Delhi for the 3rd time, said " we have no idea what HOHO is? Me and my brother's kids always ask us to use metro since it's not available in small towns. We find it convenient and safe as these metros are always crowded as compared to buses".

- Delhi Tourism designeted buses
- Started during commonwelth games

Sangram Singh, a HOHO driver said, " I have been driving these buses since last 5 years. The majority of the travelers are foreigners who need a tour guide. Indian visitors are probably not keen, and many of them do not have idea about these transport service.

With the introduction of the new edition of Delhi metro, Heritage line which connects the major tourism spots of Delhi like Red Fort, Jama Masjid, etc. without interchanging the metro lines has added an additional option of transportation.

But what remains is the fact that Delhi Tourism has failed in promoting these luxury HOHO buses.

बहुरंगी झलक से सराबोर उड़िया महोत्सव

पूनम सिंह ,नई दिल्ली

उड़िया सांस्कृतिक महोत्सव में अंतराष्ट्रीय ख्याति के रेत कलाकार सुदर्शन पटनायक की कलाकृतियां आकर्षण का केंद्र थी । समारोह में आए दर्शक उड़िया संस्कृति से जुड़े हर पहलुओं का काफी लुत्फ उठाया ।

उड़िया महोत्सव -2018 के दूसरे संस्करण का आयोजन 9 से 11 मार्च के बीच इंडिया गेट के लॉन नम्बर-6 में हो रहा था, कार्यक्रम का उदाघ्टन समारोह 9 मार्च को शाम 6 बजे से शुरू हुआ था। केन्द्रिय गृह मंत्री राजनाथ सिंह मुख्य अतिथि थे। इस आयोजन के माध्यम से उड़िया की सामाजिक- सांस्कृतिक मान्यातएं जीवंत हो उठी । कार्यक्रम के आयोजक उड़िया समाज ने मंगलवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा है कि इस पर्व के दूसरे संस्करण में दिल्ली-एनसीआर को एक ही स्थान पर ओडिशा के गौरवशाली इतिहास एंव स्वतंत्रता संग्राम सहित संस्कृति, विरासत परम्परा, नृत्य, संगीत पकवानों को अनुभव करने का अवसर मिलेगा। इस सम्मेलन में हिरण्य मोहन्ती, संदीप महापात्र, चारुदत्त पाणिग्रही एंव देबजीत भी उपस्थित थे। प्रधान ने बताया है कि उड़िया पर्व में समृद्ध इतिहास एंव सभ्यता को प्रदर्शित किया गया था। प्रमुख हरा डोला विमान के आकार में था। जो ओडिशा में होली के दौरान सामान्यत देखा जाता है। आर्ट गैलरी में चर्चित रेत कलाकार सुदर्शन पाटनायक की निर्मित आकृतियों का प्रदर्शन किया गया था जो मुख्य आकर्षण का केन्द्र था। इस बार महोत्सव में उड़िया कलाकारों के माध्यम से कला वर्कशॉप तथा 18 वर्ष से कम बच्चों के लिए पेंटिग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के दौरान हस्तशिल्प और हथकरघा वर्ग,

नृत्य पेश करते कलाकार

- सुदर्शन पाटनायक की कलाकृति का हुआ प्रदर्शन
- बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

ओडिशा की पारंपारिक कला, शिल्प एंव परिधानों का प्रदर्शन भी किया गया। साथ ही ओडिशा की मिठाइयां, पश्चिम ओडिशा के स्ट्रीट फूड, मांसाहारी व्यंजन, उडिया थाली और ओडिया पान के स्टॉल पर भीड़ देखने को मिली। फूड कोर्ट को एक किले के रूप मे डिजाइन किया गया था। ओडिशा के प्रसिद्ध पाककला शो "पुन्टु ननांका पेट" जात्रा के मेजबान पुन्टु नना भी फूड जोन में मौजूद थे।

CP closed against sealing Drive

Siddharth Urmil, New Delhi

It was one of the sad and hopeless day for confectionary lovers of Delhi. It was so as Wenger's, one of the most enduring and oldest bakeries at the corner of A block, Connaught Place was closed on Tuesday. Its Black Forest pastries, French bread, and Swiss chocolates have a special place in the hearts of the people of Delhi but it wasn't only Wenger's rather the entire Connaught place, the largest financial, commercial and business center of the capital, was closed, despite being a working day. This is due to the one-day strike call given by The Confederation of All India Traders (CAIT) of Delhi against the controversial Sealing drive of the Administration.

All major wholesale and retail markets in the National Capital remained shut on Tuesday as traders have decided to observe a 'trade bandh' against the ongoing sealing drive by the municipal corporations on the direction of a Supreme Court-appointed monitoring committee.

Effect of protest in Connaught Place

- Entire CP was closed on Tuesday
- Palika Bazaar remains unaffected

CAIT, in a statement, said that more than seven lakh traders belonging to about 2, 500 traders' associations participated in the protest.

Prominent markets of Delhi that remained closed on Tuesday included Chandni Chowk, Connaught Place, Lajpat Nagar, Amar Colony, Khan Market, South Extension, Greater Kailash, Karol Bagh, Sadar Bazaar, Kamla Nagar, Ashok Vihar, Vikas Marg, Preet Vihar, Model Town, Azadpur, Kalkaji and several others. While talking to this Atul Bhargava, president of New Delhi Traders Association traders and shopkeepers said shopkeepers of Connaught Place have extended their support to the bandh call.

"No major action has been initiated in Connaught Place by the New Delhi Municipal Council (NDMC). However, it has sealed some basements for alleged misuse and is also carrying out a survey of mezzanine floors. Our demand is that traders must be given some time to rectify the alleged violation if any. Sealing is not the only solution," he said.

Palika Bazaar was the only shopping complex where all the shops were open and were very much functioning as normal. This was in stark contrast with what was above Palika Bazaar, that is, CP. When asked, why the shops are open which is not the case with CP? 'This is NDMC's authorized market and no unauthorized construction happens here,' said Vinay Kumar Thakur, General Secretary, Palika Bazaar Market Association. 'By heart, we are with the traders. But these are government shops; we pay high rents for these shops. We traders don't have any religion we just need to work,' he further added. When asked what his comment on the on-going sealing? He said, 'This is absolutely wrong. Since decades we have been working here. Governments come and go, but if they had an objection, were they sleeping till now?

GOTIPUA: A Dance dedicated to God

Divya Bishi, New Delhi

Wearing the traditional dress kanchula, bright colored blouse and nibibandha, silk cloth around their waist "Gotipua" showed an extraordinary dance performance at the 2nd edition of Odisha Parba, 2018.

Odisha Parba 2018

Gotipua, a dance form dedicated to lord Jagganath and lord Krishna is performed by boys, dressed like female dancers.Though the dance is performed in groups,the name suggests the opposite as, "Goti" means 'single' and "pua" denotes'boy'.

Most of the postures of this dance can be closely identified with Odissi, as it gives special place to acrobatics where yogic postures and special 'mudras' are enacted.

Although there is no fixed theory about how the dance form came into being, but a school of thought holds the view that with the decline of the Devdasi system, pandas (priests)choose the underprivileged boys to dance for lord Jagganath, to carry forward the tradition. While another theory states that Chaitanya Mahaprabhu,(BhaktiSaint) wanted dance procession to please the deity and since 'Devdasis' were not supposed to perform dance during their menstrual days as it was considered impure therefore eventually young boys(3-11 years) were chosen.

Gotipua performing acrobatic dance

- Dance form dedicaed to lord Jagganath
- Performed by boys, dressed like female dancers

To keep themselves look feminine,Gotipou, don't cut their hairs until they themselves quit their dance or reach adolescence. "Pattasari"(Odisha handloom saree), sandalwood makeup and ethnic jewelries make the performance more feminine. Their temporary transgender identity, during their performance represents the supreme god who creates humans and also probably of gender other than male and female.

Bhawani, 11, a gotipau dancer, eldest among all in his dance group said, "we are given rigorous training for years before joining the group, not everyone who goes under the training process becomes thepart of the group, those who perform feel that they are the most special child of the lord.

स्वच्छता के प्रति जागरूक हैं झुग्गियों की महिलाएं

कल्पना बघेल, नोएडा

झोपड़ पट्टी में रहने वाली महिलाएं सरकार के स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूक हो रही हैं। कुछ गरीब महिलाओं ने सरकारी मदद के बिना खुद अपने संसाधन जुटाकर शौचालय का निर्माण कर डाला , जो दुसरो के लिए एक अच्छा उदाहरण बन गया है।

साहस

नोएडा सेक्टर -105 की झुग्गीबस्ती की महिलाओं ने महज एक पखवाड़े में अपने बल-बुते ही पक्के शौचालय का निमार्ण कर दिया। दिलचस्प बात यह है कि शौचालय बनाने के लिए इन महिलाओं ने बाजार से न ही कोई निर्माण साम्रागी खरीदी न ही किसी कारीगर को बुलाया। ये अपने घर के आस-पास बिखरे ईंटों को इकठ्ठा कर निर्माण कार्य शुरू कर दिया।

इतना ही नहीं, महिलाओं ने अपने घरों के अलावा दुसरों के घरों के सामने भी कामचलाऊ शौचालय बनाकर समाज के सामने एक मिसाल पेश किया है। वह भी जब दशकों बाद भी झुग्गियां बिजली और पानी जैसी बुनयादी सुविधाओं से वंचित हैं। सड़क न होने के कारण निमार्ण साम्रगी पहुंचाने के लिए कोई तैयार न हुआ तो गंगा ,काली , सविता ,जमुना जैसी महिलाओं ने अपने स्वाभिमान के लिए सिर पर ईंटें , बजरी , टंकी, किवाड़ आदि रखकर शौचालय बना डाला।

सेक्टर -105 में महिलाओं द्वारा निर्मित शौचालय

- महज पन्द्रह दिनों में हुआ शौचालय का निर्माण
- बाज़ार से नहीं खरीदी गयी कोई भी सामग्री

हिम्मत ए मर्दां तो मदद ए खुदा

निस्वार्थ भाव से ट्रैफिक संचालन कर रहे गंगाराम

शिवम सिंह चौहान, नई -दिल्ली

अकसर एक आम इंसान अपने जीवन में आने वाले दुखों से टुट जाता हैं। मगर इस दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो दुःखों से भागते नहीं बल्कि उसका डटकर सामना करते हैं। सीलमपुर के मेट्रो स्टेशन के नीचे दुकान लगाने वाले गंगाराम भी कोई अपवाद नहीं है। उसने अपने दुःख से कभी हार नहीं मानी बल्कि उसे एक चुनौती मान कर उसका डटकर मुकाबला किया। आज वह दूसरों के लिए एक करामाती इंसान का चेहरा बन कर समाजसेवी के रुप में अपनी एक जगह बना चुका है। दरअसल गंगाराम पर दुख का पहाड़ उस समय टूटा जब उसके जवान बेटे की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई । उसके बाद गंगाराम ने ठान लिया की अब किसी और की जिन्दगी में ऐसा दुख न आए इसके लिए उसने खुद को समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया। विगत 5 वर्षों से गंगाराम सीलमपुर में फ्लाईओवर के पास दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर निःशुल्क और निःस्वार्थ भाव से ट्रैफिक का संचालन कर रहा है।

पांच साल पहले गंगाराम के 17 वर्षीय बेटे की सड़क दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी टूट गई थी। वह छह महीने के लम्बे ईलाज के बाद भी अपने बेटे को नहीं बचा सका।

इस घटना ने उसके जीवन को बदल दिया ऐसी घटना किसी और के साथ न हो इसलिए वह सीलमपुर चौराहे पर ट्रैफिक इंस्पेक्टर की मदद करने लगा। यहां ड्यूटी पर तैनात ट्रैफिक इंस्पेक्टर अर्जुन ने बताया वह बिना किसी स्वार्थ के सालों भर काम करते हैं।

वहाँ से गुजरने वाले एक कार चालक नदीम हुसैन ने बताया की वह गंगाराम को तीन-चार वर्षों से देख रहा है। यहाँ से गुजरने वाले अधिकारी चौराहे पर रुक कर गंगाराम के काम को देख कर शाबासी भी देते हैं। गंगाराम को पास की ही सोसाइटी के लोगों ने सम्मानित भी किया है। गंगाराम से इस बाबत पुछने पर वो मौन हो जाते हैं और उसकी आँखें गीली हो जाती है। शायद उन्हें उनका बेटा याद आ जाता है।

- सड़क दुर्घटना में हुई थी बेटे की मौत
- सोसाइटी के लोग कर चुके हैं सम्मानित

बाप मोची तो बेटा - बेटी इंजीनियर

आशीष पंवार , नोएडा

इंसान जाति से नहीं बल्कि कर्म से महान बनता है। यह बात आज भी सार्थक साबित हो रही है। भारतीय इतिहास को खंगाले तो छोटी जाति से आने वाले कबीरदास, दादू दयाल, गुरुनानक जैसे समाजसेवी महात्माओं ने अपने कर्म से मानवता का पाठ पढाया था, ये तीनों ही निचली जातियों से थे। इन महापुरुषों के विचार और कर्मों से इनकी जाति बौनी पड गई । दिल्ली एन सी आर में हजारों की संख्या में लोग मोची का काम कर अपने परिवार को चलाते हैं। ये लोग भले ही मोची का काम करते हो लेकिन वे अपने कर्म से समाज सेवा में जुटे हुए हैं। हालांकि इनमें से ज्यादातर की माली हालात खराब है और आज के दौर में मोची के काम से घर चलाना मुश्किल है। फिर भी मोची के काम से भी कुछ लोग अपवाद बनकर समाज के लिए मिशाल बन जाते है।

खास खबर

दिल्ली के त्रिनगर विधानसभा में रामपुरा क्षेत्र के मुख्य चौराहे पर मोची का खोका लगाने वाले बीरबल सोनी अपने इस काम से लोगों की सोच को गलत साबित कर रहे हैं । बीरबल करीब 40 साल पहले हरियाणा के कैथल जिले के काकौत गांव से दिल्ली आये थे। करीब एक साल मजदूरी करने के बाद उन्हें अपना काम करने की सुझी। उन्होंने मोची का काम शुरु कर दिया। काम में मेहनत और लगन से उनकी अच्छी कमाई होने लगी। जिससे परिवार का खर्च अच्छे से पूरा होने लगा। आज उनके बडे बेटे की जूतों की दुकान है तो वही छोटा बेटा रेलवे में अधिकारी हैं। बीरबल आज भी मोची का खोका लगाते है।

- ज्यादातर मोची की माली हालत खराब
- बीरबल अपने काम से लोगों को दे रहे हैं प्रेरणा

दिल्ली के रमेश नगर में मोची का खोका लगाने वाले बाबू राम पिछले 42 सालों से इस काम में लगे है, और खुशहाली से परिवार का भरण-पोषण कर रहे है। दो बच्चों में बेटा रेलवे में इंजीनियर और बेटी एच.सी.एल कम्पनी में इंजीनियर हैं।

ग्रेटर नोएडा में मोची और टायर पंचर की दुकान साथ में लगाने वाले रतिराम 12 सालों से यह काम सफलता से कर रहे हैं। रतिराम का कहना है कि कोई भी काम मेहनत और लगन से किया जाये तो सफलता निश्चित तौर से मिलती है।

सम्पादक - रोहिताश चौधरी , उप - संपादक - तनिष्क सिंह तोमर , पृष्ठ सज्जा - कविता रावत , हिंदी संवादाता - धर्मेन्द्र सिंह , कल्पना बघेल , अंकित गुप्ता , पूनम सिंह , परमवीर सिंह , आशीष पंवार , शिवम English correspondent- Divya Bishi , Siddharth Urmil , मेंटर - राजीव सिंह , सिन्धु झा